

LVNA

**S**imilitudo huius hymni cum illo Solis aliquos auctores duxit ad ambo iudicare factos à uno compositore. Gemoll et Baumeister opinati sunt de auctore huius saltem alium hymnum aut inspirare inspiratusve esse. Descriptio Lunae valde similis est illae Solis, et lingua multis locis identica.

**Ε**pithetum hic usus τανυσίπτερον tardam compositionem implicare possit, ut nullum exemplum esse videtur alatae Σελήνης (Lunae) in litteraturam, et haec forma valde incerta est in artes visuales. Probabiliter conflatio cum forma Νίκης (Victoriae), quae etiam in currus alatham designant artifices.

| Εἰς Σελήνην                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | Ad Lunam                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>μήνην ἀεῖδεν τανυσίπτερον ἔσπετε Μοῦσαι<br/>ἠδυεπεῖς κοῦραι Κρονίδεω Διὸς ἱστορες ᾠδῆς:<br/>ἥς ἄπο αἴγλη γαῖαν ἐλίσσεται οὐρανόδεικτος<br/>κρατὸς ἀπ’ ἀθανάτοιο πολὺς δ’ ὑπὸ κόσμος ὄρωρεν<br/>αἴγλης λαμπούσης στίλβει δέ τ’ ἀλάμπετος ἄῃρ<br/>χρυσέου ἀπὸ στεφάνου ἀκτῖνες δ’ ἐνδιάονται<br/>εὗτ’ ἂν ἀπ’ Ὀκεανοῖο λοεσσαμένη χροά καλὸν<br/>εἶματα ἔσσαμένη τηλαυγέα διὰ Σελήνη</p> | <p>Lúnæ alátæ cantiónem divínæ agíte me Músæ<br/>Fíliæ melódicæ Ióvis perféctæ officii ódes<br/>Vénit ad Gérram suus lúmen orígine éxitus Cælo<br/>Súa figúra imortále tam mágna præést pulchritúdo<br/>Cándet e líce sua rádius ad síc inaccénsu huc árem<br/>Áurea coróna deiéctus itínerans cúm claritáte<br/>Ét venta ád Oceánum laváta tunc ést linda fórma<br/>Cúm vestiménto fulgéntē se órnat divína sic Lúna</p> |